(ख) जनसंख्या की सांस्कृतिक विशेषताओं के अंतर्गत व्यावसायिक, शिक्षा, साक्षरता, भाषा, धर्म, प्रवास, गतिशीलता, वैवाहिक स्थिति, ग्रामीण एवं नगरीय आवास इत्यादि का अध्ययन,

(ग) आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों का, जैसे अल्पविकसित राज्यों, अनुसूचित जातियों एवं जनतातियों का विशेष अध्ययन।

ट्रिवार्था और क्लार्क द्वारा जनसंख्या भूगोल के लिए निश्चित किए गए अध्ययन क्षेत्र में काफी समानताएँ हैं, परन्तु कुछ बिन्दुओं को ट्रिवार्था ने अधिक जोड़ा है। यानि ट्रिवार्था के अनुसार जनसंख्या भूगोल का अध्ययन क्षेत्र क्लार्क की तुलना में अधिक है। इस संदर्भ में जेलिंस्की ने अपनी पुस्तक "A Prologue to Population Geography" में यह लिखा कि जनसंख्या भूगोल मानव संबंधी जैविक, सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पहलुओं का अध्ययन करता है, जिनके संबंध में विकसित देशों की जनगणनाओं के आँकड़े इक्ट्ठा किए जाते है। अपने इस परिभाषा अथवा विचार से जेलिंस्की ने जनसंख्या भूगोल बनाने का प्रयास किया।

जेलिंस्की के मतानुसार जनसंख्या से संबंधित सभी घटनाओं को तीन प्रमुख वर्गो में रखा जा सकता है-

1.4.1 जैविक विशेषताएँ :-

जेलिंस्की का मानना है कि जनसंख्या संबंधी प्रजातीय, लिंगानुपात, आयु संरचना जन्म एवं मृत्यु के कारण, बीमारियों इत्यादि पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।

1.4.2 सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताएँ :-

जनसंख्या की कई विशेषताएँ होती हैं। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिग विशेषताएँ भी शामिल हैं। इन विशेषताओं के अंतर्गत परिवार का आकार, श्रमिकों के वर्ग, अधिवास, वैवाहिक स्थिति, ग्रामीण नगरीय परिवेश, गृह निर्माण संबंधी विशेषताएँ, जाति, वर्ग, आयु, शिक्षा, जन्म स्थान, धर्म, राष्ट्रीयता इत्यादि का अध्ययन शामिल है। परन्तु इस प्रकार के आँकड़े सभी देशों के अथवा क्षेत्रों के उपलब्ध नही होते हैं। ऐसे आँकड़ों नियमित जनगणना होती है और फिर आँकड़े (सभी प्रकार के) प्रकाशित किए जाते हैं।

1.4.3 जनसंख्या गतिशीलता संबंधी विशेषताएँ :-

जनसंख्या को गतिशीलता अथवा जीवंत बनाने में जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास जैसे कारकों का योगदान होता है। जन्म दर और मृत्यु दर प्राकृतिक वृद्धि से संबंधित हैं तथा ये कारक सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। चूँकि इन कारकों में पर्याप्त क्षेत्रीय विषमताएँ पायी जाती हैं इसलिए इसमें भी पर्याप्त क्षेत्रीय भिन्नताएँ मिलती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि राष्ट्र की औसत

से क्षेत्रीय स्तर पर ये आँकड़े काफी अंतर रखते हैं। ये अंतर विकासशील अथवा पिछड़े देशों में और के कुछ क्षेत्र विकास के मामले में घनी होते हैं जबकि कुछ पिछड़ी स्थिति में होते हैं। इसलिए इन जगहों पर सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक मान्यताओं में अंतर के कारण जन्म दर एवं मृत्यु दर में अंतर पाया जाना स्वभाविक हो जाता है।

जनसंख्या को गतिशीलता प्रदान करने में प्रवास जैसे कारक का भी योगदान होता है। प्रवास एवं बर्हिप्रवास अर्थात आंतरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रवास संबंधी नीतियों के कारण जनसंख्या वृद्धि में परिवर्तन आता है, आंतरिक क्षेत्र में भी विकास के स्तर में परिवर्तन के कारण इसमें क्षेत्रीय विषमताएँ पाई जाती हैं जिसके कारण कुछ विशेष-क्षेत्रों/शहरों की ओर लोगों का पलायन होता है। जिसके कारण कई सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणाम दोनों जगहों को भुगतने पड़ते हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि प्रवास के कारण जनसंख्या वृद्धि में परिवर्तन आता है।

जनसंख्या परिवर्तन के जिम्मेदार इन कारकों से संबंधित आँकड़ों की गुणवता प्राय: संदेहात्मक होती है। क्योंकि आँकड़ों एवं व्यावहारिक स्थिति में पर्याप्त अंतर, विशेषकर विकासशील देशों में, पाया जाता है फिर भी जेलिंस्की का मानना है कि इन्हीं तीन वर्गो के अंतर्गत जनसंख्या भूगोल का अध्ययन किया जाना बेहतर है।

उपर्युक्त विवरणों से कुछ विद्वानों के मत जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र से संबंधित स्पष्ट है। परन्तु जनसंख्या को अथवा जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को सामान्यीकृत करना इस आधार पर संभव नहीं है। जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को सीमा में बाँधना ठीक नहीं है। क्योंकि जनसंख्या, समाज और जनसंख्या संबंधी तत्व सभी परिवर्तनशील हैं, इसमें नित नए परिवर्तन होते रहते हैं जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। फिर भी जनसंख्या भूगोल वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में जनसंख्या भूगोल के मुख्य अध्ययन क्षेत्र इस प्रकार है-

1. **संकल्पनात्मक एवं आधारभूत क्षेत्र** :- इसके अंतर्गत जनसंख्या भूगोल, भूगोल के अन्य शाखाओं से कैसे भिन्न है इसका अध्ययन किया जाता है। भूगोल के इस शाखा के अध्ययन के क्या उद्देश्य है? जनसंख्या भूगोल और जनांकिकी के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाता है जनसंख्या भूगोल के लिए आवश्यक आँकड़ों के स्त्रोत कौन-कौन से है, इनकी विश्वसनीयता कैसे बनी रहे, इन आँकड़ों के आधार पर मानचित्र एवं रेखाचित्र कैसे खींचा जाय, इसका अध्ययन किया जाता है। साथ ही विश्व एवं भारतीय विद्वानों ने भूगोल के इस शाखा-केन्द्र के विकास में अपना क्या योगदान दिया है। इसका भी अध्ययन संकल्पनात्मक एवं आधारभूत क्षेत्र के अन्तर्गत ही करते है। जनसंख्या भूगोल का अध्ययन की पद्धति जनसंख्या भूगोल का अध्ययन करना अधिक उचित होगा। इसका भी अध्ययन इसी संल्पनात्मक क्षेत्र के तहत शामिल है।

2. **सैद्धांतिक पक्ष** :- भूगोल की अन्य शाखाओं के साथ ही साथ जनसंख्या भूगोल के भी कुछ विशिष्ट सिद्धांत हैं। जनसंख्या वृद्धि एवं संसाधन को ध्यान में रखते हुए ये सिद्धांत वर्तमान परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य में कहाँ तक तर्कसंगत हैं अथवा उचित है, इसका अध्ययन भी जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में ही शामिल हैं।

3. **गतिशील पक्ष** :- जनसंख्या की गतिशील बनाने वाले तत्वों, जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास का विस्तृत सामयिक एवं स्थानीय अध्ययन किया जाता है। इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थिति का अध्ययन भी गतिशील पक्ष के अंतर्गत ही किया जाता है।

4. **भौगोलिक पक्ष** :- भौगोलिक पक्ष के अंतर्गत जनसंख्या अथवा किसी क्षेत्र विशेष (लघु अथवा वृहत) की जनसंख्या की आयु, लिंग, साक्षरता, शिक्षा, धर्म, जाति, प्रजाति, जनजाति, ग्रामीण, नगरीय संगठन, शहरीकरण, कार्यशीलता, जेंडर इश्यू तथा विशेष क्षेत्रों की जनसंख्या संरचना एवं संगठन संबंधी पक्षों का अध्ययन इसमें किया जाता है।

5. **अन्य पक्ष** :- जनसंख्या भूगोल सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप में विशेष अंतर नहीं रखता है। फिर भी ऐसे कई अध्ययन के पक्ष हैं जो सिर्फ क्षत्र में अध्ययन के दौरान ही समझ में आते हैं कि इनका भी अध्ययन जनसंख्या भूगोल के तहत ही किया जाना चाहिए। वास्तव में जनसंख्या भूगोल को समाज के लिए अधिक उपयुक्त बनाने के लिए इसे अनुप्रयुक्त स्वरूप दिया जाना अति आवश्यक हैं। यही कारण है कि जनसंख्या शिक्षा आज ने केवल उच्च शिक्षा बल्कि स्कूली शिक्षा में भी स्थान पा चुका है। जनसंख्या संबंधी समस्याओं एवं नीतियों का अध्ययन भी इसमें शामिल है।

उपर्युक्त सभी पक्ष जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत शामिल हैं और इसी दृष्टि से जनसंख्या भूगोल में अध्ययन एवं शोध कार्य किया जाना तर्कसंगत एवं उचित है। ऐसे विचार लेखक के अपने विचार है तथा इसमें परिवर्तन की भी पूरी संभावनाएँ है। इसके बावजूद इतना तो अवश्य ही कहा जा सकता है कि जनसंख्या भूगोल जनसंख्या संबंधी सभी पक्षों का भौगोलिक अध्ययन करता है।

1.5 जनसंख्या भूगोल के उपागम (Approaches to Population Geography)

किसी भी विषय वस्तु और विधितंत्र की अपनी सीमाएँ होती हैं उन्हीं सीमाओं के अन्तर्गत इस विषय की पढ़ाई की जाती है। जनसंख्या भूगोल के साथ भी यही बात लागू होती है। भूगोल के अंतर्गत अध्ययन की कई पद्धतियाँ प्रचलित हैं, इन सभी के अलग-अलग गुण एवं दोष है। यही नहीं, पृथ्वी पर संसाधन और विशेषकर मानव संसाधन का वितरण काफी असमान है तथा इनकी विशेषताएँ भी अलग-अलग हैं। जनसंख्या भूगोल मुख्य रूप से जनसंख्या का समय और स्थान के संदर्भ में भौगोलिक

अध्ययन करता है। कल्याणकारी उपागम के विकास के बाद से जनसंख्या भूगोल में भी इस बात पर बल दिया जाने लगा है कि कौन, कहाँ, कब और कैसे सुविधाएँ प्राप्त करता है। विश्व स्तर पर जनसंख्या की विशेषताओं का अध्ययन सूक्ष्म एवं वृहत स्तर पर किया जाता है। यह अध्ययन प्रादेशिक पक्ष को उजागार करता है। इसका मतलब यह नहीं है कि जनसंख्या अध्ययन में क्रमबद्ध उपागम का स्थान नहीं है। ऐसे कई जनसंख्या कारक या तत्व हैं जिनका क्रमबद्ध अध्ययन किए बिना क्षेत्रीय अध्ययन भी संभव नहीं है।

जनसंख्या और क्षेत्रीय विकास के बीच घनिष्ठ संबंध होता है इसकी कुशलता एवं क्षमता तथा गुणवता समाज के लिए अधिक मायने रखता है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या संबंधी तत्वों, तथ्यों एवं विशेषताओं के अध्ययन के लिए विभिन्न उपागम प्रचलित हैं जिनमें कुछ मुख्य हैं-

1. क्रमबद्ध उपागम (Systematic Approach)
2. प्रादेशिक उपागम (Regional Approach)
3. ऐतिहासिक उपागम (Historical Approach)
4. समकालीन उपागम (Contemporary Approach)
5. व्यावहारिक उपागम (Behavioural Approach)
6. प्रणाली उपागम (System Approach)

क्रमबद्ध उपागम के अंतर्गत किसी एक भौगोलिक तत्व का संपूर्णता के संदर्भ में अथवा वैश्विक अध्ययन किया जाता है। इसी प्रकार, जनसंख्या, भूगोल के अंतर्गत जनसंख्या संबंधी तत्व का संपूर्णता में अथवा वैश्विक अध्ययन किया जाना है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या के तत्व जिसका ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वातावरण एवं आर्थिक दृष्टि से महत्व है, का अध्ययन विशेष महत्व का हो जाता है। क्रमबद्ध उपागम के बिना जनसंख्या संबंधी विशेषताओं का क्षेत्रीय अध्ययन भी संभव नहीं है। जनसंख्या का आकार, वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, आयु संरचना, साक्षरता, धर्म, भाषा, ग्रामीण नगरीय, आवास, व्यावसायिक संरचना इत्यादि विभिन्न तत्वों का वैश्विक अथवा वृहद स्तरीय अध्ययन ही क्रमबद्ध उपागम हैं। इनमें से किसी एक तत्व को अथवा सभी तत्वों का जब पंचायत, जिला, राज्य, देश, महादेश के स्तर पर अध्ययन किया जाता है तब वह वैश्विक अध्ययन क्रमबद्ध अध्ययन बन जाता है।

दूसरी ओर जब किसी क्षेत्र विशेष चाहे वह प्रदेश छोटा हो या बड़ा की सभी जनसंख्या संबंधी तथ्वों का (क्रमबद्ध) अध्ययन किया जाता है तब वह प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय अध्ययन कहलाता है। क्षेत्रीय अध्ययन के बाद ही दो प्रदेशों के बीच जनसंख्या संबंधी तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो जाता है। जिससे आवश्यकतानुसार नीतियाँ बनाने में मदद मिलती है।

ऐतिहासिक उपागम एवं समकालीन उपागम भी जनसंख्या अध्ययन की प्रमुख विधि है। ऐतिहासिक उपागम के जरिए जनसंख्या संबंधी विशेषताओं का भूतकालीन अध्ययन किया जाता है। अर्थात पूर्व के